चश्मा पहनो, चमत्कार देखो

• ब्रह्माकुमार विनायक, आबू पर्वत

मानव का सहज स्वभाव है कि वह जो भी साधना करता है, उसमें तीव्र गति से आगे बढ़कर कम समय में अधिक सफलता पाकर मंज़िल पर पहुँचना चाहता है। परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु, संपूर्ण ज्ञान, सर्वगुण और शक्तियों के सागर परमात्मा शिव की श्रीमतानुसार चलते हुए, हम भी तीव्र गति से पुरुषार्थ कर मनुष्य से देवता बनने के लक्ष्य को शीघ्र संपन्न करने के लिए योजनायें बनाते रहते हैं। अब हमारे सामने प्रश्न यह है कि तीव्र पुरुषार्थ करना चाहते हुए, प्रयत्न करते हुए, योजना बनाते हुए भी जितनी तीव्रता चाहिए उतनी नहीं ला पाते, क्यों?

विघ्न है अवगुण देखना

कुछ लोग समझते हैं कि इसका कारण विघ्न या परिस्थितियाँ हैं। लेकिन सोचने की बात है कि पुरुषार्थ का अर्थ ही है विघ्नों पर विजय पाना, असंभव को संभव बनाना। तो यह सवाल ही नहीं उठता कि वे हमें निर्बल बनाएँ। इसलिए ही भगवान शिव कहते हैं, विघ्न लगन का साधन हैं। मानव इतिहास में एक भी ऐसा प्रसिद्ध पुरुष नहीं है जिसने बगैर विघ्न के सफलता पाई हो। इसलिए विघ्न को पुरुषार्थहीनता का कारण बनाना उचित नहीं है। फिर ऐसा कौन-सा कारण हो सकता है जो हमें उड़ने से, परमात्म प्यार में लवलीन होने से, सर्व खज़ानों को अपने में समाकर मालामाल होने से रोक रहा है। जब हम एकांत में बैठ, अंतर्मुखी होकर, परखने और निर्णय करने की शक्ति का संपूर्ण प्रयोग कर, अंतर्मन का उत्खनन करेंगे तो उत्तर स्पष्ट दिखाई देगा कि पुरुषार्थहीनता का कारण कोई विघ्न नहीं बल्कि हमारा ही एक अवगुण है और वह है, दूसरों के, उनमें भी जो निकट संबंध-संपर्क में हैं उनके अवगुण और कमी-कमज़ोरी देखना। सिर्फ देखना ही नहीं, उनको ग्रहण करना, वर्णन करना, उनसे आश्चर्यचकित होना, उस व्यक्ति से तंग होकर अंदर ही अंदर विरोध, नफरत, घृणा के संकल्पों को उत्पन्न करके परेशान होना और इस परदर्शन में ही समय, संकल्प, शक्ति को व्यर्थ गंवाते रहना, यह है तीव्रता को रोकने का मुख्य कारण।

अवगुण देखना माना आत्मा को ग्रहण लगना

कुछ लोग कहते हैं, हम तो काम, क्रोध, मोह, लोभ जैसे बड़े-बड़े विकारों का त्याग कर चुके हैं। औरों को देखने की आदत तो बहुत ही छोटी है, यह कैसे हमें रोक सकती है? लेकिन यह कहना हमारी परखने की शक्ति की कमज़ोरी को प्रदर्शित करता है। जैसे ज्योतिषशास्त्र में कहा गया है कि सौर वर्ष में सबसे अशुभ समय है ग्रहणकाल। वे कहते हैं, सूर्य, इस धरती पर रहने वाले सर्व जीव जगत के जीवन का आधार है। सूर्य की रोशनी से धरती को वंचित करना, अशुभ और भविष्य में आने वाली आपदाओं का सूचक है। ग्रहण अल्पकाल का है तो भी उसका प्रभाव बहुतकाल तक रहता है। वैसे ही, ज्ञान सूर्य भगवान शिव, सर्व मनुष्यात्माओं के भाग्यविधाता हैं। जैसे सूर्य और धरती का संबंध रोशनी द्वारा जुड़ता है, वैसे ही आत्मा का परमात्मा के साथ संबंध मन और बुद्धि द्वारा जुड़ता है। मन और बुद्धि में